सम-लामीयक घटना चक्र

G Sप्वाइंटर 9 भारतीय राजव्यवस्था एवं शासन

2017, अगस्त माह से सम-सामयिक घटना चक्र मुख्य पत्रिका के साथ निःशुल्क अतिरिक्तांक की शृंखला प्रारंभ की गई है। शृंखला में सामान्य अध्ययन के विभिन्न विषयों पर GS 'प्वाइंटर' क्रमशः प्रस्तुत किया जाएगा।

भारतीय राजव्यवस्था एवं शासन

भारत का संवैधानिक विकास

- * भारतीय विधान परिषद को बजट पर बहस करने की शक्ति प्राप्त हुई

 भारतीय परिषद अधिनियम, 1892 के अंतर्गत
- कलकत्ता में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना का प्रावधान किया गया था
 रेगुलेटिंग एक्ट, 1773 में
- मारत में संघीय न्यायालय की स्थापना की गई थी
 - मारत सरकार अधिनियम, 1935 के द्वारा
- भ गारत का संघीय न्यायालय स्थापित किया गया था 1937 में
- ★ सही सुमेलित है
 - नियंत्रण परिषद की स्थापना पिट्स का भारतीय अधिनियम, 1784
 - सर्वोच्च न्यायातय की नियामक अधिनियम, 1773
 - स्थापना
 - इंग्लिश मिशनरियों को भारत चार्टर अधिनियम, 1813 में कार्य करने की अनुमति
 - गवर्नर—जनरल की परिषद में —चार्टर अधिनियम, 1833 कानूनी सदस्य की निवुक्ति
- 1919 के मारत शासन अधिनियम की प्रमुख विशेषताएं हैं
 - प्रांतों की कार्वकारिणी सरकार में द्वैध-शासन की व्यवस्था,
 केंद्र द्वारा प्रांतों को विधायिनी शक्ति का हस्तांतरण

- भारतीय विधानपातिका प्रथम बार द्वि-सदनीय बनाई गई
 —1919 के भारत सरकार अधिनियम द्वारा
- राष्ट्रपति की अध्यादेश निर्गत करने की शक्ति प्रेरित है—
 - गारत सरकार अधिनियम, 1935 से
- भारतबासियों को अपने देश के प्रशासन में कुछ हिस्सा लेना संभव
 चार्टर एक्ट, 1833 के अधिनियम ने
- भारत के संविधान में केंद्र और राज्यों के बीच किया गया शक्तियों का
 विभाजन आधारित है शारत सरकार अधिनियम, 1935 के द्वारा
- * एक 'संघीय व्यवस्था' और 'केंद्र' में 'द्वैध शासन' भारत में लागू किया गवा था— — 1935 के अधिनियम द्वारा
- अखिल भारतीय महासंघ स्थापित करने का प्रावधान शामिल किया गया
 मारत सरकार अधिनियम, 1935 में
- * 1935 के अधिनियम द्वारा स्थापित संघ में अवशेष शक्तियां दी गई थी
 गवर्नर जनरल को
- भारत शासन अधिनियम, 1935 में स्वीकार किया हुआ महत्वपूर्ण और
 स्थायी अवयव नहीं है देश के तिए लिखित संविधान
- 1935 का गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट महत्वपूर्ण है
 - क्योंकि यह भारतीब संविधान का प्रमुख स्रोत है
- 🗯 बर्मा, भारत से अलग हुआ
 - गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1935 के फलस्वरूप

वर्ष 1937 के चुनावों में कांग्रेस का मंत्रिमंडल बना था

- कुल 8 प्रांतों में

- * एक निर्वाचित संविधान सभा द्वारा भारत के संविधान का निर्माण करने का प्रस्ताव किया गया था - क्रिप्स मिशन द्वारा
- मारव में उपनिवेशी शासन के संदर्भ में 1883 में इल्बर्ट बिल का उद्देश्य
 वा —जहां तक अदालतों की दांडिक अधिकारिता का संबंध था,
 भारतीय तथा यूरोपीय लोगों को बरावरी पर रोकना
- कैबिनेट मिशन योजना के अंतर्गत संविधान निर्मात्री परिषद में प्रत्येक प्रांत को आवंटित सदस्य संख्या निर्धारित करने के लिए एक प्रतिनिधि जनसंख्या के अनुपात में था
 — 10 लाख ब्यक्ति
- कैबिनेट मिशन के सदस्य थे
 - पंथिक लारेंस, स्टैफर्ड क्रिप्स और ए.वी. अलेक्जेंडर
- मारतीय संविधान सभा का गठन किया गया था
 - कैबिनेट मिशन योजना, 1946 के अंतर्गत
- * 1946 में निर्मित अंतरिम सरकार में कार्यपालिका परिषद के उप सभापति थे— जवाहरलाल नेहरू
- कथन (A): वेदेल योजना के अनुसार, कार्यकारी परिषद में हिंदू और मुस्लिम सदस्यों की संख्या समान होती थी।
 कारण (R): वेदेल का विचार था कि ऐसी व्यवस्था से मारत का बंटवारा बच जाता।
- मारत के लिए संविधान की रचना हेतु संविधान सभा का विचार
 स्विप्रथम प्रस्तुत किया था
 स्वराज पार्टी द्वारा 1934 में
- संविधान सभा के बारे में सही कथन हैं—
 - इसने बड़ी संख्या में समितियों की मदद से काम किया, उनमें से प्रारूप समिति सबसे महत्वपूर्ण थी
 - अल्पसंख्यक समुदाय जैसे- ईसाई, एंग्लो-इंडियन और पारिसबों को सभी में पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया गया।
 - इसकी चुनाव प्रक्रिया 1935 के अधिनियम के 6वीं अनुसूची पर आधारित थी। कर सम्पत्ति और श्रैक्षणिक योग्यता के कारण मताविकार सीमित था।
 - 4. वह बहुदलीय निकाय श्री
- मारत के संविधान का प्रारूप तैयार करने वाली संविधान सभा के सदस्यों को — विभिन्न प्रांतों की विधान सभाओं द्वारा चुना गया
- संविधान सभा में सदस्यों का चुनाव हुआ था

प्रांतीय समाओं द्वारा

- संविधान सभा की प्रथम बैठक की अध्यक्षता की थी
 डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा ने
- मारत की 'संविधान निर्मात्री समा' या संविधान समा के अध्यक्ष थे
 डॉ. राजेंद्र प्रसाद

मारतीय संविधान सभा की स्थापना की गई थी
 9 दिसंबर, 1946 को

भारत की संविधान समा का प्रथम अधिवेशन शुरू हुआ
 – 9 दिसंबर, 1946

- भारत को एक संविधान देने का प्रस्ताव संविधान सभा द्वारा पारित
 किया गया था 22 जनवरी, 1947 को
- संविधान समा में 'उद्देश्य प्रस्ताद' या प्रस्तावना प्रस्तुत किया गया था
 पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा
- मारतीय संविधान के निर्माण से संबंधित सही कथन हैं—
 - पं. नेहरू के उद्देश्य प्रस्ताव का, जो संविधान समा द्वारा स्वीकार किया गया था, संविधान के निर्माण पर असर था।
 - 2. उद्देशिका बहुत महत्वपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति करती है।
 - 3. संविधान को भारत के लोगों ने आदेशित किया है।
- मारतीय संविधान को बनाने हेतु मारतीय संविधान समा के कुल अधिवेशन हुए वे
- मारत के संविधान के निर्माण में संविधान समा को समय लगा
 2 वर्ष 11 माह 18 दिन
- सही सुनेलन इस प्रकार है—
 संविधान समा के पहले उपाध्यक्ष एच.सी. मुखर्जी प्रारूप समिति के मूलतः एकमात्र के.एम. मुन्शी कांग्रेसी सदस्य
 राजस्थान की रियासतों का वी.टी. कृष्णमाचारी प्रविनिधित करने वाले संविधान समा के सदस्व
 संध-संविधान समिति के अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू
- संविधान सभा की प्रांतीय संविधान समिति का अध्यक्ष था
 सरदार पटेल
- * मारतीय संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे — डॉ. बी.आर. अम्बेडकर
- संविधान सभा द्वारा स्थापित मौलिक अधिकारों और अल्पसंख्यकों हेतु
 सलाहकार समिति के अध्यक्ष थे
 सरदार पटेल
- झॅ. बी.आर. अम्बेडकर की अध्यक्षता में संविधान सभा की प्रारूप समिति में अन्य सदस्य थे
- ★ संविधान सभा ने डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की अध्यक्षता में प्रारूप
 समिति का गठन किया
 29 अगस्त, 1947 को
- भारतीय संविधान के निर्माण के समय सांविधानिक सलाहकार थे
 बी.एन. राव
- भारतीय संविधान का प्रथम प्रारूप तैयार किया गया था
 बी.एन. राव द्वारा

- भारत की संविधान समा ने राष्ट्रीय ध्वज को सर्वप्रथम स्वीकार किया
 22 जुताई, 1947 ई. को
- संविधान निर्मात्री परिषद की 'झंडा समिति ' के अध्यक्ष थे

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद

मारत का साविधान पूर्ण रूप से तैयार हुआ था

26 नवंबर, 1949 को

— 1950 में

- म गारतीय संविधान लागू हुआ था 26 जनवरी, 1950 को
- संविधान को 26 जनवरी के दिन लागू करने का निर्णय इसलिए किया
 गया, क्योंकि कांग्रेस ने इस तिथि को 1930 में
 स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया था
- * भारतीय संविधान को अपनाया गया था 🕒 **संविधानिक सभा द्वारा**
- भारत का संविधान अंगीकृत एवं अधिनियमित हुआ था
 26 नवंबर, 1949 को
- बी.आर. अम्बेडकर का संविधान सभा में निर्वाचन हुआ था—
- वंबई प्रेसीडेंसी से
- # डॉ. भीम राव अम्बेडकर का जन्म और मृत्यु हुई
 क्रमश: 1891 तथा 1956 में
- 'जन गण मन' को भारत के राष्ट्रगान के रूप में अपनावा गया
- भारत शासन द्वारा राजकीय चिह्न (State Emblem) अंगीकृत (Adopt)
 किया गया था
 26 जनवरी, 1950 से
- ★ सही कथन हैं
 - तृतीय गोलम्ज सम्मेलन के विचार-विमर्श की परिणति भारत सरकार अधिनियम, 1935 के पारित होने के रूप में हुई।
 - भारत सरकार अधिनियम, 1935 ने ब्रिटिश भारत के सूबों और भारतीय रियासतों के एक संघ पर आधारित आल इंडिया फेडरेशन के गठन का उपबंध किया।
- कथन (A): भारत का संविधान देश की आवस्थकताओं की पूर्ति करता है।

कारण (R) : इसको एक गृहीत संविधान कहा जाता है।

- (A) और (R) दोनों सत्य हैं, परंतु (R), (A) का सही
 स्पष्टीकरण नहीं है।
- * संविधान सभा में वयस्क मताधिकार को 15 वर्ष के लिए स्थिगत करने की बात की थी — मौलाना आजाद ने
- मारक की स्वतंत्रका के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को एक राजनैतिक दल के रूप में भंग कर दिया जाना चाहिए, सुझाव दिया था

- महात्मा गांधी ने

 "अपनी राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया में भारतीय संविधान के निर्माताओं ने अल्पसंख्यकों के हितों तथा भावनाओं के महत्व को कम करके आंका है।" यह कथन है
 — आइवर जेनिंग्स का

- ¥ "संविधान समा कांग्रेस थी और कांग्रेस मारत था''। कहा था
 ऑस्टिन ने
- ☀ गारतीय संविधान सभा में कुल महिला सदस्याएं थीं 15

संविधान पर विदेशी प्रभाव

मारत के संविधान में उद्देशिका का विचार लिया गया है

बू.एस.ए. के संविधान से

- मारतीय राजनीतिक व्यवस्था में सर्वोच्च है
 संविधान
- मारत में न्याविक पुनरिक्षण (Judicial Review) की संकल्पना ली गई
 संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान से
- ★ गारत की संघात्मक व्यवस्था संबंधित है कनाडा से
- मारतीय संसदीय प्रणाली ब्रिटिश संसदीय प्रणाली से इस बात में भिन्न है कि भारत में

— न्यायिक पुनर्विलोकन (Judicial Review) की प्रणाली है

- ★ न्यायिक पुनर्विलोकन की व्यवस्था भारत और यू.एस.ए. में है
- मारतीय परिसंघ और अमेरिकी परिसंघ में समान रूप में जो लक्षण पाया जाता है, वह है
 - संविधान के निर्वचन के लिए पिरसंधीय उच्चतम न्यायालय
- मारत के संविधान में सम्मिलित समवर्ती सूची देन है

ऑस्ट्रेलिया की

- मारतीय संविधान में 'राज्य के नीति निदेशक तत्वों' की संकल्पना
 आधारित है आवरलैंड के संविधान पर
- राज्य सभा के गठन में प्रतिभा, अनुभव एवं सेवा को प्रतिनिधित्व देने में भारतीय संविधान निर्माता प्रभावित हुए थे

- आइरिश गणतंत्र से

सही सुमेलन इस प्रकार है—

(संवैधानिक प्रावधान) (स्त्रोत)

मूल अधिकार - सं.रा. अमेरिका

शासन की संसदीय प्रणाली - ग्रेट ब्रिटेन (यू.के.) आपात उपबंध - जर्मनी का वीमर संविधान

राज्य नीति के निदेशक तत्व - आयरतैंड

सही सुमेलन इस प्रकार है :

विधि का शासन - इंग्लैंड

विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया -

- जापान

राष्ट्रपति के विचारार्थ राज्यपाल द्वारा

विधेयक सुरक्षित रखना - कनाडा

विस्तृत उमयनिष्ठ सूची या समवर्ती सूची - ऑस्ट्रेलिया

मंत्रिमंडलीय सरकार - ब्रिटिश संविधान

केंद्र-राज्य संबंध - कनाडा का संविधान भारत राज्यों का संघ है तथा संघ में - कनाडा

अधिक शक्ति निहित है

गारतीय संविधान में मौलिक कर्त्तव्यों का विचार लिया गया है रूस (पूर्व सोवियत संघ) के संविधान से

कथन (A): भारत का संविधान सबसे अधिक लंबा हो गया है। कारण (R): मौलिक अधिकारों का अध्याय अमेरिकन संविधान के मॉडल से लिया गया है।

(A) तथा (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याखा नहीं है।

- गारतीय संविधान में सिन्निहित मूल अधिकारों की अवधारणा इहण की गई है संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान से
- तिखित संविधान का प्रारंभ हुआ

- अमेरिका से

सही सुमेलित हैं-

संविधान में अनुच्छेद और अनुसूची

गारतीय संविधान में हैं - 400 से अधिक आर्टिकिल्स (अनुच्छेद)

गारतीय संविधान में आरंभ में अनुच्छेद श्रे -395

गारतीय संविधान में कुल अनुसूचियां हैं

सही कथन है-

 भारत के संविधान में नवीं, दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं अनुसूचियों को संविधान (संशोधन) अधिनियम द्वारा जोड़ा गया

भारतीय संविधान को विभाजित किया गया है वाडस भागों में

नागरिकता से संबंधित प्रावधान संविधान के जिस भाग में हैं, वह है — भाग 2

-12

सही सुमेलित हैं-नागरिकता संविधान का भाग II मौलिक अधिकार संविधान का भाग III संविधान का भाग VI राज्य

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-1 सूची-II नए राज्यों का गठन भारतीय संविधान का अनु. 3 भारतीय संविधान का भाग-2 नागरिकता भारतीय संविधान का भाग- 3

मौतिक अधिकार प्रशासनिक अधिकरण की -भारतीय संविधान का अनु. 323-A

4

हमारे संविधान का वह भाग जिसमें तीन सोपानों में पंचायतें बनाने की परिकल्पना की गई है - भाग IX

संघ और राज्यों के बीच विधायी संबंध के बारे में उल्लेख है

- भारतीय संविधान के भाग 11 और अध्याय 1 में

- गारतीय संविधान की अनुसूचियों में से वह अनुसूची जो राज्य के नामों की सूची तथा उनके राज्य क्षेत्रों का ब्योरा देती है
- गारत के संविधान की चौथी अनुसूची विवेचित करती है

- राज्य सभा में स्थानों के आवंटन को

यदि भारत संघ के एक नए राज्य का सृजन करना हो, तो संविधान की अनुसूचियों में से जिस एक को अवश्य संशोधित किया जाना चाहिए, वह है - पहली अनुसूची

सही सुमेलित हैं-

(अनुसूची) (विषय)

चतुर्थ राज्य समा में स्थानों का आवंटन

जनजातीय क्षेत्र षध्दर

भूगि सुधार नवम

सुवी-। सुवी-11 विधायी शक्तियों का वितरण सातवीं अनसूची

आठवीं अनुसूची भाषाएं

कुछ अधिनियमों का विधिमान्यकरण नवीं अनुसुची दल परिवर्तन के आधार पर निर्हता दसवीं अनुसूची

राज्य मूमि सुधार अधिनियमों को, संवैद्यानिक सुरक्षा प्रदान करने हेतु सम्मिलित किया गया है 9वीं अनुसूची में

मारत के संविधान के अंतर्गत आर्थिक योजना का विषय है

- समवर्ती सूची में

समवर्ती सूची का विषय है आपराधिक मामले

मारत के संविधान की समवर्ती सूची में है

जनसंख्या नियंत्रण और परिवार नियोजन

समवर्ती सूची में है

शिक्षा, जो प्रारंभ में राज्य सूची का विषय था, उसे समवर्ती सूची में स्थानांतरित किया गया - 42वें संशोधन द्वारा

★ सही सुमेलन इस प्रकार है—

विषय सूची समवर्ती सुवी वन डाकघर बचत बैंक संघीय सूची

राज्य सूची जन स्वास्थ्य

सही सुमेलन इस प्रकार है

केंद्र सूची — जनगणना राज्य सूची — पुलिस और सार्वजनिक व्यवस्था समवर्ती सूची — जनसंख्या निवंत्रण और परिवार निवोजन अवशिष्ट विषय (केंद्र के अधीन) — अंतरिक्ष अनुसंघान

मारतीय संविधान के वे प्रावधान, जो शिक्षा पर प्रभाव डालते हैं-

1. राज्य की नीति के निदेशक तत्व, 2. ग्रामीण और शहरी, स्थानीय निकाय, 3. पंचम अनुसूची, 4. वष्ठ अनुसूची, 5. सप्तम अनुसूची

*	भारत के संविधान की एक अनुसूची जिसमें दल-बदल विरोधी कानून	★ सही सुमेलित है —	
	विषयक प्रावधान हैं — दसवीं अनुसूची में	सूची-1	सूची-II
*	गारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची के अंतर्गत संघ सूची में उल्लेख	(संविधान के अनुस्टेद)	(विषय)
	है — वैंकिंग, बीमा और जनगणना का	अनु. 124 -	संघीय न्यायपालिका
*	वह बिषय जो भारतीय संविधान की 'संघ सूची' से संबंधित हैं	अनु. 5 -	नागरिकता
	— रक्षा, वैदेशिक मामले, रेलवे	अनु. 352 -	आकरिमक प्रावधान
*	गारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची के अंतर्गत राज्य सूची में	अनु. 245 -	विधायी शक्तियों का वितरण
	उल्लेख है -रेलवे पुलिस का	★ सही सुमेलित है-	
*	'पंचायती राज' विषय सम्मितित है 🔀 🗕 राज्य सूची में	सूची-1	सूर्वी-11
*	वह विषय जो भारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची-111	अनुच्छेद 14 -	समानता का अधिकार
0575	समवर्ती सूची में शामिल है — दंड प्रक्रिया	अनुच्छेद ३६ -	नीति निदेशक तत्व
*	'बिवाह', 'विवाह बिच्छेद' और 'गोद लेना' संविधान की सातवीं सूची	अनुच्छेद 74 -	मॅत्रिपरिषद
72	में सम्मितित किए गए हैं - सूची III - समवर्ती सूची में	अनुच्छेद 368 -	संशोधन प्रक्रिया
*	सरकारों द्वारा शुल्क एवं कर लगाने का अधिकार उल्लिखित है	 सही सुमेलन इस प्रकार 	है −
	— सातवीं अनुसूची में	सूची-1	सूची-11
*	मूमि सुघार	विधानतः नए राज्य को शा	मिल करना - अनुच्छेद 2
*	और नियंत्रण के लिए विशेष उपबंध है	समता का अधिकार	- अनुच्छेद 14
	आर । नयत्रण क तिए । वराव उपबंध ह — पांचवीं अनुसूची में	गिरफ्तारी और निरोध से	The state of the s
	— पायपा अनुसूचा म मारतीय संविधान की छठीं अनुसूची जिन राज्यों के जनजातीय क्षेत्रों	राष्ट्रपति का विधेयक को र	
•	के प्रशासन से संबंधित है, वह हैं — मेघालय, त्रिपुरा तथा निजोरम	का अधिकार	
*	भारत के संविधान में पांचवीं अनुसूची और छठीं अनुसूची के उपबंध	★ सही सुमेलित है —	
*	किए गए हैं	सूची-।	सुवी-11
	 अनुसूचित जनजातियों के हितों के संरक्षण के लिए 	(संविधान का अनुच्छेद)	(अंतर्वस्तु)
*	पंचायतों को संवैद्यानिक दर्जा प्रदान किया गया है	अनुच्छेद 54	भारत के राष्ट्रपति का निर्वाचन
T	- अनुकोद 243 के अंतर्गत	अनुच्छेद 75	प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद की नियुक्ति
*	संविधान की ग्यारहवीं अनुसूची संबंधित है - पंचायती राज से	अनुच्छेद 155	राज्य के राज्यपाल की नियुक्ति
*	"राष्ट्रपति के सिफ़ारिश के बगैर कोई विधेयक जो कर लगाता है,	अनुच्छेद 164	राज्य के मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद की
	दिषायिका में नहीं रखा जा सकता'-यह प्राद्धान भारत के संविधान के	3	नियुक्ति
	अंतर्गत आता है - अनुच्छेद 117 में	₩ सही सुमेलित है-	3
*	वित्त विधेयकों के बारे में विशेष उपबंध किया गया है	सूची-1	सुवी-11
	— अनुच्छेद 117 में	अनुच्छेद 323-A	प्रशासनिक अधिकरण
*	गारतीय संविधान में अखिल गारतीय सेवाओं का प्रावधान किया गया है	अनुच्छेद 324	निर्वाचन
	अनुच्छेद-312 में	अनुच्छेद 330	लोक समा के लिए अनुसूचित
*	सही सुमेलित हैं-	3	जाति व अनुसूचित जनजाति
	भारत का निर्वाचन आयोग — अनुच्छेद 324		सदस्यों के आरक्षण
	अनुच्छेद 39A - समान न्वाय एवं निःशुत्क विधिक सहायता	अनुच्छेद 320	लोक सेवा आयोगों के कार्य
	अनुच्छेद ४० - ग्राग पंचायतों का संगठन	वित्त आयोग	अनुच्छेद-280
	अनुच्छेद 44 - समान नागरिक संहिता	वित्तीय आपात	अनुच्छेद-360
	17-		

स्पेमिलत है—

सूची-I सूची-II (संस्थान) (अनुच्छेद)
भारत का नियंत्रक एवं अनुच्छेद 148
महालेखा परीक्षक
संघ तोक सेवा आयोग अनुच्छेद 315
आपात स्थिति की घोषणा अनुच्छेद : 352

सही सुमेलन इस प्रकार है—

अनु. 215—उच्च न्यायातय का अभिलेख न्यायातय होना अनु. 222—किसी न्यायाधीश का एक उच्च न्यायातय से दूसरे उच्च न्यायातय में अंतरण

अनु. 226—विशेष रिट जारी करने की उच्च न्यायालय की शक्ति अनु. 227—सभी न्यायालयों के अधीक्षण की उच्च न्यायालय की शक्ति

सही सुमेलित हैं-

सूबी-I
अनुच्छेद 76
आपत का महान्यायवादी
अनुच्छेद 131
सर्वोच्च न्यायातय का
क्षेत्राधिकार
कार्य करने का अधिकार
कार्य करने के लिए सही
और मानवीय स्थितियां
बच्चों के लिए मुफ्त तथा
अनुच्छेद 45
अनिवार्य शिक्षा

सही सुमेलन इस प्रकार है—
 भारतीय संविधान का भाग IX - पंचायत
 भारतीय संविधान का भाग VIII - संघ राज्य क्षेत्र
 भारतीय संविधान का भाग IVA - मूल कर्तव्य
 भारतीय संविधान का भाग IXA - नगर पालिका

सही सुमेलित है—

पंचायत - भाग 9 नगरपालिकाएं - भाग 9-क सहकारी समितियां - भाग 9-ख

★ सही सुमेलन इस प्रकार है—

संविधान का भाग XV निर्वाचन

संविधान का भाग XVI कुछ वर्गों के संबंध में

विशेष उपवंध

संविधान का भाग XVIII संविधान का भाग XVIII राजगाषा आपात उपबंध उद्देशिका

निम्नलिखित अवतरण में,

"हम भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को,

सामाजिक, अर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अश्रिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की खतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए.

तथा उन सब में.

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंध्ता बढ़ाने के लिए

दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज......'X'........को एतदृद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"

26 नवंबर, 1949

 भारतीय गणतंत्र की 26-1-1950 को सही संवैधानिक वस्तुस्थिति, जब संविधान लागू किया गया था

— संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य

☀ संविधान में हमारे राष्ट्र का उल्लेख किया गया है-

- मारत तथा इंडिया नाम से

मारतीय संविधान की प्रस्तावना के संबंध में शब्दों का सही क्रम है
 सार्वभौमिक, समाजवादी, पंथनिरपेख, प्रजातांत्रिक

42वें संवैधानिक संशोधन द्वारा प्रस्तावना में जोड़े गए शब्द हैं
 —समाजवाद, पंथनिरपेक्षता

- मारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य वर्णित करता है— संविधान की प्रस्तावना
- वह शब्द जो 1975 में भारतीय संविधान की प्रस्तावना में सिम्मिलित
 नहीं था
- मारतीय संविधान की प्रस्तावना में मारत को घोषित किया गया है —
 एक सार्वभीम, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, प्रजातांत्रिक गणतंत्र
- ※ संविधान की उद्देशिका के संबंध में सही है—
 - पंडित नेहरू द्वारा प्रस्तुत ''ऑब्जेक्टिव प्रस्ताव'' अंततोगत्वा उद्देशिका बना।
 - 2. इसकी प्रकृति न्यायबोग्य (Justiciable) नहीं है।
 - संविधान के विशिष्ट प्रावधानों को यह रद (Override) नहीं कर सकता।
- मारतीय संविधान की उद्देशिका में संशोधन किया गया था

वयातीसवें संशोधन द्वारा

- वह शब्द जो 26 नवंबर, 1949 को अंगीकृत भारतीय संविधान की 🗰 भारतीय संविधान के उद्देश्यों को प्रतिबिंबित करता है प्रस्तावना में सम्मिलित नहीं थे-
 - समाजवादी, पंथनिरपेक्ष तथा अखंडता
- भारत के संविधान के आमुख का लक्ष्य उसके सभी नागरिकों के लिए सुनिश्चित करना है-
- सामाजिक क्या आर्थिक ऱ्याय, विचार तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, अवसर की समानता तथा व्यक्ति की प्रतिष्ठा
- 'भारत एक गणतंत्र है' इसका अर्थ है
 - मारत में वंशानुगत शासन नहीं है
- गारत में लौकिक सार्वभौमिकता है, क्योंकि संविधान की प्रस्तावना आरंभ होती है हम भारत के लोग शब्दों से
- * 'हम, भारत के लोग (We the People of India)' शब्दों का प्रयोग गारतीय संविधान में किया गया संविधान की प्रस्तावना में
- "सभी व्यक्ति पूर्णतः और समान रूप्र से मानद हैं''। यह सिद्धांत जाना जाता है
- गारत के संदर्भ में 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द का सही भाव व्यक्त करता है भारत में राज्य का कोई धर्म नहीं है।
- भारत के संविधान की उद्देशिका में नहीं है लोक कल्याण
- भारतीय संविधान की प्रस्तावना में वर्णन नहीं है
 - अर्थिक स्वतंत्रता का
- गारतीय संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित नहीं है
 - चार्मिक न्याय
- संविधान की प्रस्तावना के बारे में कथन सही है
 - "समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष" शब्द 1950 में लागू संविधान के अंग नहीं थे
- संविधान का वह भाग जो उसकी आत्मा कहताता है उद्देशिका
- भारतीय संविधान की प्रस्तावना को ''हमारे संप्रम्, प्रजातांत्रिक गणतंत्र - के.एम. मुंशी ने की जन्मकुंडली" कहा
- संविधान को एक पवित्र दस्तावेज कहा है
 - बी.आर. अम्बेडकर ने
- उच्चतम न्यायालय ने धारणा प्रस्तुत की कि 'उद्देशिका संविधान का - बोम्मई बनाम युनियन ऑफ इंडिया बाद में भाग है'
- सर्वोच्च न्यायालय ने प्रस्तावना को भारतीय संविधान की मौलिक संरचना का गाग स्वीकार किया केशवानंद भारती विवाद में
- गारत के संविधान के उद्देश्यों में से एक के रूप में 'आर्थिक न्याय' का उपबंध किया गया है
 - उद्देशिका और राज्य की नीति के निदेशक तत्व में
- गारतीय संविधान की प्रस्तावना में जिन आदर्शों एवं उद्देश्यों की रूपरेखा दी गई है, उनकी व्याख्या की गई है
 - मूल अधिकारों, राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों एवं मौलिक कर्त्तव्यों के अध्याय में

- - संविधान की प्रस्तावना
- मारत के संविधान की उद्देशिका में व्यवस्था की गई है
 - तीन प्रकार के न्याय की

शासन प्रणाली

- राज्य का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है
- संप्रमुता
- गारतीय संविधान में जिस प्रकार की शासन प्रणाली की व्यवस्था की गई है, वह है संसदात्मक
- मारतीय संविधान की विशेषता है
 - संसदात्मक सरकार, संघात्मक सरकार तथा स्वतंत्र न्यायपातिका
- मारत में संसदीय प्रणाली की सरकार है, क्योंकि
 - मंत्रिपरिषद, लोक समा के प्रति उत्तरदायी है
- गारत के संदर्भ में, संसदीय शासन-प्रणाली में निम्न सिद्धांत संस्थागत रूप में निहित हैं :
 - 1. मंत्रिमंडल के सदस्य संसद के सदस्य होते हैं।
 - 2.जब तक मंत्रियों को संसद (लोकसभा) का विश्वास प्राप्त रहता है, तब तक ही वे अपने पद पर बने रहते हैं।
- संसदात्मक शासन व्यवस्था में
 - विधाविका का कार्यपालिका पर नियंत्रण होता है।
- राष्ट्रपति पद्धति में समस्त कार्यपालिका की शक्तियां निहित होती हैं - राष्ट्रपति में
- मारत में राजनीतिक व्यवस्था के मूलमूत लक्षण हैं-
 - यह एक लोकतांत्रिक गणतंत्र है।
 - 2. इसमें संसदात्मक रूप की सरकार है।
 - 3. सर्वोच्च सता भारत की जनता में निहित है।
- सही कथन हैं-
 - L भारत एक लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था है।
 - 2. भारत एक प्रभुसता संपन्न राज्य है।
 - 3. भारत में लोकतांत्रिक समाज है।
 - भारत एक कल्याणकारी राज्य है।
- मारतीय राजतंत्र की विशेषता है-
- एक संविधान संगत सरकार, लोकतांत्रिक सरकार, विधि का शासन
- 'कल्याणकारी राज्य' (Welfare State) का उद्देश्य है
 - अधिकतम संख्या का अधिकतम कल्याण सुनिश्चित करना
- मारतीय संविधान का दर्शन है
 - कल्याणकारी राज्य, समाजवादी राज्य, राजनैतिक समानता
- मारत में राजनैतिक सत्ता का प्रमुख स्रोत है
- जनता
- अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली का आधारभूत तत्व है
 - एकल कार्यपालिका

सम-समिव घटना एक

भारत में प्रजातंत्र इस तथ्य पर आधारित है कि

जनता को सरकारों को चुनने तथा बदलने का अधिकार प्राप्त है

- गारत का संविधान पिरसंधीय विनिर्धारित होता है
 - केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों का वितरण से
- म गारतीय संविधान है अंशतः कढोर और अंशतः लचीला
- भारत की संसदीय शासन प्रणाली एवं ब्रिटेन की संसदीय शासन
 प्रणाली में अंतर है
 प्रणाली का
- कथन (A): भारत के साँविधान में एक संघीय प्रणाली का प्रावधान है। कारण (R): उसने एक बहुत शक्तिशाली केंद्र की रचना की है।
 - दोनों (A) और (R) सही हैं तथा (R),(A) का सही
 - स्पष्टीकरण नहीं है।
- मारत के संविधान का संघीय लक्षण है
 - केंद्र तथा राज्यों के बीच शक्ति का बंटवारा,पूर्ण रूप से तिखित संविधान, स्वतंत्र न्यायपातिका
- भारतीय संघीय व्यवस्था में एकात्मक तत्व हैं
 - चज्यपालों की नियुक्ति, राज्य सभा में असमान प्रतिनिधित्व,
 अखिल भारतीय सेवाएं
- गारत में संघीय व्यवस्था से संबंधित सही कथन है
 - संविधान शासन की मूल संरचना के लिए एक संघीय व्यवस्था की प्रस्तावना करता है तथा एकात्मक झुकाव का उसमें सशक्त मिश्रण है।
- कथन (A): भारत का राष्ट्रपति परोक्षतः निर्वाचित होता है। कारण (R): भारत में संसदीय प्रणाली को गणतंत्रवाद के साथ जोड़ा गया है।
 - दोनों (A) और (R) सत्य हैं तथा (R), (A) का एक मान्य स्पष्टीकरण है।
- कथन (A): राजनीतिक दल लोकतंत्र के जीवन-रक्त हैं।
 कारण (R): लोग खराब शासन के लिए सामान्वतः राजनीतिक दलों
 को कोसते हैं।
- (A) और (R) दोनों सही है तथा (R) सही स्पष्टीकरण है (A) का।
- कथन (A): भारत में संघवादिता व्यवहारिक नहीं है।
 कारण (R): भारत एक संघीय राज्य नहीं है।
 - A सही है, परंतु R गलत है।
- कथन (A): भारत की संघात्मक संरचना का मुख्य उद्देश्य इसकी बहु-आयामी विविधताओं में से एक राष्ट्र का निर्माण करना और राष्ट्रीय एकता को संरक्षित करना था।
 - कारण (R): विविधताओं के समंजन से एक सशक्त, न कि कमजोर, मारतीय राष्ट्रीयता का निर्माण हुआ है।
 - (A) और (R) दोनों अपने आप में सत्य हैं और (R),
 (A) की सही व्याख्या है।

- कथन (A): महिलाएं, दलित, निर्धन एवं अल्पसंख्यक समूह मारत में लोकतंत्र के सबसे बड़े दावेदार हैं। कारण (R): भारत में लोकतंत्र अधिक आत्म-सम्मान की कामना का वाहक बनकर उभरा है। — दोनों (A) और (R) सत्य हैं तथा (R), (A) का एक मान्य स्पष्टीकरण है।
- मारतीय संविधान के वृहद होने के कारण हैं
 यह संघ तथा राज्य सरकारों का संविधान है।
- कारण (A): भारतीय संविधान अर्द्ध संघात्मक है।
 कारण (R): भारतीय संविधान न तो संघात्मक है और न ही एकात्मक।
 (A) तथा (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
- मारतीय संघवाद को सहकारी संघवाद कहा है पी. आस्टिन ने
- ※ "भारत अर्घ संघात्मक राज्य है", कहा था के.सी. व्हीयर ने
- "भारतीय संविधान अधिक कठोर तथा अधिक लचीले के मध्य एक अच्छा संतुलन स्थापित करता है।" कथन है — के.सी. स्रीयर का
- 'संविधान को संघात्मकता के तंग ढांचे में नहीं ढाला गया है'', कथन
 है बी. आर. अम्बेडकर का
- मारतीय राजनीतिक पद्धति के बारे में सही है—
 - धर्मनिरपेक्ष राज्य, संसदीय पद्धति की सरकार, संघीव नीति
- गणतंत्रीय अवधारणा से संबंधित है
 - एक राज्य जिसमें जनता सर्वोच्च हो, सर्वोच्च शक्ति निर्वाचित
 प्रधान में निहित हो, एक ऐसी सरकार जो जनता द्वारा निर्वाचित
 प्रतिनिधियों की हो
- संवैधानिक सरकार वह है जो व्यक्ति की स्वतंत्रता के हित में राज्य की सत्ता पर प्रमावकारी प्रतिबंध लगाती है।

राष्ट्रीय प्रतीक

- ¥ भारत का राष्ट्रीय पशु है बाध
- * भारत का राष्ट्रीय पुष्प है
 कमल
- ¥ मारत का राष्ट्रीय पक्षी है मोर
- * 'भारतीय राष्ट्रीय ध्वज ' में चक्र प्रतीक है न्वाय का
- मारत के राष्ट्रीय ध्वज में आरों (तीली) की कुल संख्या है 24
- संपूर्ण राष्ट्र गान का वादन (गावन) काल है 52 सेकंड

राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र

- ધ मारतीय संसद को नया राज्य बनाने का अधिकार है
 - संविधान के अनुच्छेद 3 के अंवर्गत
- ★ नए राज्य के गठन (carve out) की शक्ति निहित है संसद में
- मारत के संविधान के अंतर्गत राज्यों की सीमाओं को परिवर्तित करने
 की शक्ति प्राप्त है
 मंसद को

- एक राज्य को संघ में सम्मिलित करने अथवा नए राज्यों की स्थापना करने की कार्यपालिकायी शक्ति प्राप्त है - संसद को
- संविधान के प्रथम अनुच्छेद के अनुसार भारत है

- राज्यों का युनियन (संघ)

- नए राज्यों के निर्माण के बारे में सही है
 - संसद विधि द्वारा एक नए राज्य का निर्माण कर सकती है, इस प्रकार की विधि में संविधान की पहली अनुसूची और बौथी अनुसूची के संशोधन का प्रावधान होगा,इस प्रयोजन के लिए विधेयक संसद में तब तक पुरःस्थापित नहीं किया जा सकता, जब तक इसे उस राज्य के विधान मंडल को निर्दिष्ट नहीं कर दिया गया है, जिसके क्षेत्र, सीमाओं या नाम पर इसका प्रभाव पड़ता है।
- भारत में एक नया राज्य सुजित करने वाले विधेयक को पारित होना अनिवार्य है - संसद में साधारण बहुमत द्वारा।
- भारत में संघ राज्यों का प्रशासन होता है – राष्ट्रपति द्वारा
- कथन (A) : भारत संघ नहीं है कारण (R): किसी भी राज्य का क्षेत्र, सीमा, नाम उसकी सहमति के बिना भी परिवर्तित करने की शक्ति संघीय संसद को प्राप्त है।

- A गलत है, विंज़् R सही है।

- नए राज्यों के निर्माण के लिए संवैधानिक उपबंध है-
 - किसी राज्य का क्षेत्र बढ़ाकर, किसी राज्य का क्षेत्र घटाकर, किसी राज्य का नाम परिवर्तन कर
- सही कथन हैं-

 संविधान में "यूनियन ऑफ स्टेट्स" शब्द प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि भारतीय राज्यों को अलग होने का अधिकार नहीं है। 2. एस.के धर आयोग ने राज्यों के पुनर्गठन हेतु भाषा के आधार की अपेक्षा प्रशासनिक सुविधा को वरीयता दी बी। 3. पंडित नेहरू, सरदार पटेल और पट्टामि सीतारमैया की अध्यक्षता में कांग्रेस कमेटी, राज्यों के पुनर्गठन में भाषायी आधार

के पक्ष में नहीं थी। यदि भारतीय संघ में एक नए राज्य का सुजन किया जाना है तो

संशोधन करना आवश्यक होगा - प्रथम अनुसूची को

गारत में संघ शासित प्रदेश हैं

लोकसमा में केंद्रशासित प्रदेशों के लिए सीटें (स्थान) आरक्षित हैं -20

राज्य पुनर्गठन आयोग ने 1 नवंबर, 1956 को बनाए

14 राज्य एवं 6 संघ राज्य।

- गारत में 29 राज्य एवं 7 संघशासित प्रदेश हैं
- संघ राज्य क्षेत्र हैं
 - अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, दमन और दीव तथा पुडुचेरी

- वह राज्य जिसकी राजधानी का नाम स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अभी तक नहीं बदला गवा
 - आंध्र प्रदेश (नई राजधानी के रूप में हैदराबाद के स्थान पर अमरावती प्रस्तावित)
- दिल्ली है एक केंद्रशासित प्रदेश
- दिल्ली को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का दर्जा दिया गया

- 69वें संविधान संशोधन द्वारा

- सही कथन हैं-
 - (i) गोवा को 1987 में पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ
 - (ii) दीव, खम्भात की खाड़ी (Gulf of Khambhat) में एक टापू है
 - (iii) दमन और दीव को भारतीय संविधान के 56वें संशोधन द्वारा गोवा से अलग किया गया
- सिविकम को विधिवत भारत संध के एक पूर्ण राज्य के रूप में - 36वें संविधान संशोधन द्वारा सम्मिलित किया गया
- राज्यों का भारत संघ के संपूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त होने का सही कालानुक्रम है - नगातैंड, हरियाणा, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
- मारतीय राज्यों का, उनके निर्माण के अनुसार, कालानुक्रम है
 - 1. सिक्किम, 2. अरुणाचल प्रदेश, 3. छत्तीसगढ़, 4.झारखंड
- छत्तीसगढ़ राज्य स्वरूप में आया 1 नवंबर, 2000 को
- उत्तराखंड राज्य की स्थापना हुई वर्ष 2000 में
- बिकल्प में दिए गए राज्यों का गठन निम्न वर्षों में हुआ था-

गठन का वर्ष
1953
1966
1971
1975

सही सुमेतन है-

राज्य	स्थापना वर्ष	
नगालैंड	*	1 दिसंबर, 1963
मेघालय		21 जनवरी, 1972
सिक्किम	2	16 मई, 1975
अरुपाचल प्रदेश	*	20 फरवरी, 1987

राज्यों के निर्माण का सही अवरोही क्रम इस प्रकार है-

राज्य	निर्माण का वर्ष	
हरियाणा		1966
गहाराष्ट्र	2	1960
राजस्थान	*	1956

सत्य कथन हैं-

 गोवा को दमन एवं दीव से अलग किया गया। बम्बई राज्य गुजरात एवं महाराष्ट्र में विभाजित किया गया। हिमाबल प्रदेश पहले संघशासित प्रदेश की सूची में था।

सम-तामधिक घटना चक्र

★ 'उल्फा' उग्रवादी संबंधित है — असम से

'पीपुल्स वार ग्रुप' नामक आतंकवादी संगठन स्थित है

ा है

★ मौलिक अधिकार

— आंध्र प्रदेश में — ३

'मौलिक अधिकार' हैं

कावेरी जल दिवाद के अंतर्गत राज्य हैं

कर्नाटक, तमिलनाडु, पांडिबेरी, केरल

भाषा के आधार पर राज्यों के गठन हेतु राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना की गईथी
 — 29 दिसंबर, 1953 को

माषायी आधार पर भारत में सर्वप्रथम गठन हुआ है

- आंध्र प्रदेश का

🛊 आंध्र प्रदेश एक भाषायी राज्य के रूप में गठित किया गया

- 1953 華

नागरिकता

मारतीय संविधान प्रदान करता है

एकल नागरिकता

भारतीय नागरिकता प्राप्त की जा सकती है-

जन्म द्वारा, देशीकरण द्वारा, किसी भू-भाग के सम्मिलन द्वारा

 नागरिकता संशोधन अदिनियम, 2015 के अंतर्गत वह मारतीय कार्ड्यारक जो प्रवासी नागरिक के रूप में पंजीकृत होने के लिए अर्ह हैं

एक अवयस्क बच्चा जिसके अभिभावक भारतीय नागरिक हैं,
 भारतीय नागरिक की बिदेशी मूल की पत्नी,

एक व्यक्ति का परपोता/परपोती जो दूसरे देश का नागरिक है किंतु जिसके पितामह/पितामही, मातामह/मातामही संविधान लागू होने के समय भारतीय नागरिक थे।

सही कथन है

—नगालैंड, असम, मणिपुर, आंद्र प्रदेश, सिक्किम, मिपोरम, अरुणाचल प्रदेश तथा गोवा की प्रादेशिक मांगों को देखते हुए भारत के संविधान में अनुच्छेद 371A से लेकर 371I तक अंतर्विष्ट किए गए।

 दोहरी नागरिकता (Policy of Dual Citizenship) का सिद्धांत स्वीकार किया गया है
 संयुक्त राज्य अमेरिका में

किया गवा है — संयुक्त राज्य अमेरिका में

 ★ नागरिकता के अर्जन हेतु शर्तों को नियत करने के लिए सक्षम है

– संसद

मूल अधिकार

☀ सही कथन है।

10

 मारतीय संविधान में मूल अधिकारों को सामिल करने के लिए नेहरू रिपोर्ट (1928) ने समर्थन किंबा था।

संविधान द्वारा मौलिक अधिकारों को लागू करने की शक्ति दी गई है
 सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों को

आपातकालीन स्थिति में निलंबित किए जा सकते हैं

— वाद योग्य

मारतीय संविधान में नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं
 अनुच्छेद 12 से 35 के अंतर्गत

 मारतीय संविधान के अनुच्छेदों में विधायन सत्ता पर पूर्ण नियंत्रण लगाता है
 अनुच्छेद 14

'समानता का अधिकार' संविधान के निम्न अनुच्छेदों में के अंतर्गत
 दिया हुआ है— अनु. 14, अनु. 15, अनु. 16, अनु. 17 एवं अनु. 18

शिक्षण संस्थाओं में, जिसमें गैर-सरकारी व गैर-अनुदान प्राप्त भी सम्मिलित हैं, अन्य बिछड़ों, अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति हेतु आरक्षण की सुविधा प्रदान की गई है— अनुस्केद 15(5) वे अंवर्गत

कथन (A): सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में समान आधार निर्मित करने के उद्देश्य से राज्य असमान लोगों के लिए मिन्न व्यवहार कर सकता है।

कारण (R): समान लोगों में विधि समान होगी और समान रूप से प्रशासित की जाएगी।

— (A) और (R) दोनों सही हैं और (A) का सही सम्टीकरण (R) है।

संवैधानिक प्रावधानों को संधीय संसद/राज्य विधान पालिकाओं द्वारा
 बनाए गए नियमों/कानुनों पर प्राथिनकता प्रदान करता है

अनुच्छेद 13

 मारतीय संविधान के अनुच्छेद 13 का मुख्य उद्देश्य संविधान की सर्वोच्चता सुनिश्चित करना है — मौतिक अधिकार के संदर्भ में

मारतीय संविधान में 'स्वतंत्रता का अधिकार' चार अनुच्छेदों द्वारा
 प्रदान किया गया है, जो हैं — अनुच्छेद 19 से अनुच्छेद 22 तक

 मारतीय न्यायालय को समान कार्य के लिए समान वेतन का मौलिक अधिकार निगमन करने हेतु सक्षम किया

(a) संविधान की प्रस्तावना में प्रयुक्त 'समाजवादी' शब्द

(b) (a) को संविधान के अनुच्छेद 14 के साथ मिलाकर पढ़ना

(c) (a) को संविधान के अनुच्छेद 16 के साथ मिलाकर पढ़ना

वर्म आदि के आधार पर विभेद का प्रतिषेध (भारत के संविधान का अनुच्छेद 15) एक मूल अधिकार है, जिसे वर्गीकृत किया जाएगा

समता का अधिकार के अधीन

मारतीय संविधान में, समता का अधिकार पांच अनुच्छेदों द्वारा प्रदान किया गया है। ये हैं — अनुच्छेद 14 से अनुच्छेद 18

 मारतीय संविधान में जैसा निहित है, समानता के मौलिक अधिकार में सम्मिलित है

कानून के संबंध समानता, सामाजिक समानता, अवसर की समानता

*	मौलिक अधिकारों के अंतर्गत बच्चों के शोषण से संबंधित है	*	सही सुमेलित है-		
	— अनुच्छेद 24		अ व		
*	आई.सी.पी.आर. के अनुच्छेद द्वारा बाल अधिकार		अनुच्छेद 23 - गानव के दुर्व्यापार एवं बलात श्रम का प्रतिबंध		
	को सुरक्षित किया गया है। — 24		अनुच्छेद २४ - कारखानों आ	दि में बातकों के नियोजन का प्रतिषेध	
*	अस्पृश्यता का उन्मूलन किया गया है 🔀 अनुच्छेद - 17 द्वारा		अनुच्छेद 26 - धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता		
*	न्यायालय उपधास्ति कर सकता है कि अपराध गठित करने वाता कोई	*	सही सुमेलित है-		
	कृत्य 'अस्पृश्यता' के आधार पर किया गया था, यदि ऐसा		गानव के दुर्व्यापार तथा बतातन्त्र	म का प्रतिषेध - अनुच्छेद 23	
	अपराध के संबंध में किया गया है।		अल्पसंख्यक वर्गों के हितों का		
	 अनुसूचित जाति के सदस्य 		संवैधानिक उपचारों का अधिका	र - अनुच्छेद 32	
*	भारत में अस्पृश्यता का निवारण निम्न उपायों द्वारा किया जा सकता है	*	अल्पसंख्यकों को अपनी मनपसंद शिक्षण संस्थाओं को स्थापित एवं		
— 1. कानून बनाकर, 2. शिक्षा की उन्नति द्वारा, 3. जनजागरण के द्वारा			संचालित करने के अधिकार को	संरक्षण प्रदान करता है	
*	'मद्रास राज्य बनाम दोरायराजन' 1951 के मुकदमे में भारतीय सर्वोच्च			— अनुच्छेद 30	
	न्यायालय के निर्णय के परिणामस्वरूप जिस मौलिक अधिकार को	*	मारतीय संविधान के अनुच्छेद 32	2 के अंतर्गत प्रवर्तित किए जा सकते हैं	
	संशोधित किया गया, वह है - बेदभाव के विरुद्ध अधिकार			 मौलिक अधिकार 	
*	अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति को मौलिक, सामाजिक-	*	सही सुमेलन इस प्रकार है-		
	आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक अधिकार दिया गया		सूची-।	सूची-11	
	— अनुच्छेद 17 के अंतर्गत		(भारतीय संविधान	(प्रावधान)	
*	भारत का संविधान स्पष्टतः प्रेस की आजादी की व्यवस्था नहीं करता		का अनुच्छेद)		
0575	है, किंतु यह आजादी अंतर्निहित है — अनुच्छेद 19(1) अ में		A. अनुच्छेद 16(2) -	किसी भी व्यक्ति के साथ उसके	
*	गारतीय संविधान में भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मूल			वंश, धर्म अथवा जाति के आधार	
4	अधिकार का प्रावधान है - अनुच्छेद 19 में			पर सार्वजनिक नियुक्ति के मामले	
*	स्वतंत्रता के अधिकार के भाग के रूप में "बिना हथियार के शांतिपूर्ण			में मेदभाव नहीं किया जा सकता।	
	ढंग से इकट्ठा होने की स्वतंत्रता'' के अंतर्गत नहीं आता है		B. अनुच्छेद 29(2)	किसी भी नागरिक को धर्म, वंश,	
	— घेराव अफसर जो अपना कर्तव्य नहीं निभाते		3	जाति, भाषा या इनमें से किसी भी	
*	नागरिक की विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता है — अवांछनीय आलोचना के कारण			आधार पर राज्य द्वारा संपोषित	
	- 기계 이렇게 되었다			अथवा राज्य से सहायता प्राप्त करने	
*	व्यक्ति के विदेश यात्रा के अधिकार को संरक्षण प्रदान करता है			वाली किसी भी शैक्षिक संस्था में	
	– अनुच्छेद 21			प्रवेश से वंचित नहीं किया जाएगा।	
*	अनुच्छेद 19(1)d को अनुच्छेद 21 से मिलाकर पढ़ने पर प्राप्त होता है		C अनुच्छेद 30(1) •	सभी अल्पसंख्यकों को, चाहे वे	
	— एकांतता का अधिकार		C. 313404 30(1)	धर्म के आधार पर हों या भाषा के	
*	धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार के प्रावधान के अंतर्गत सम्मिलित हैं-			आधार पर अपनी पसंद की शैक्षिक	
	(I) धर्म प्रचार करने का अधिकार				
	(II) सिक्खों को 'कृपाण' धारण करने एवं रखने का अधिकार			संस्थाएं स्थापित करने और उन्हें	
*	(III) राज्यों को समाज-सुधारक विधि निर्माण का अधिकार			संचालित करने का मौलिक अधिकार	
*	संविधान के अनुच्छेद 25 के अनुसार, धर्म-स्वातंत्र्य का अधिकार अधीन			होगा।	
76	है - सार्वजनिक व्यवस्था, स्वास्थ्य तथा सदाचार के		D. अनुच्छेद 31(1) -	किसी भी व्यक्ति को कानून के	
*	सिक्खों द्वारा कृपाण धारण करना धार्मिक स्वतंत्रता का अंग माना गया			प्राधिकार के सिवाए उसकी संपत्ति	
9372	है — अनुच्छेद 25 के अंतर्गत		200000 3000 Nove 00 40	से वंचित नहीं किया जाएगा।	
*	अनुच्छेद 25 का संबंध है - धर्म की स्वतंत्रता से	*	मौलिक अधिकारों का संरक्षक है	— न्यायपालिका	

- सही कथन हैं—
- (i) के.एम. मुंशी सांविधान का प्रास्त्य बनाने वाली समिति के एक सदस्य थे
 - (ii) संविधान सभा द्वारा भारतीय संविधान स्वीकार किया गया।(ii) बलवंत राय मेहता समिति रिपोर्ट 1957 द्वारा पंचायती
 - राज की संस्तुति की गई।
- नागरिकों के मौलिक अधिकारों का रक्षक तथा भारत के संविधान का अभिभावक माना जाता है
 उच्चतम न्यायालय को
- 🔻 डॉ. बी.आर. अम्बेडकर द्वारा संविधान की आत्मा कहा गया है
 - संवैधानिक उपबार का अधिकार (अनुच्छेद 32)
- कथन (A): संविधान के अनुच्छेद 32 को डॉ. अम्बेडकर ने इसकी आत्मा कहा था।

कारण (R) : अनुच्छेद 32, मौलिक अधिकारों के अतिक्रमण के बिरुद्ध प्रभावी उपचार का प्रावधान करता है।

> (A) तथा (R) दोनों ही सही हैं और (A) का सही स्पष्टीकरण (R) है।

- व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए उच्च न्यायालय जारी कर सकता है
 हैिबयस कार्पस (बंदी-प्रत्यक्षीकरण) को
- सही सुमेलन इस प्रकार है—
 मौतिक कर्त्तव्य संविधान का 42वां संशोधन
 संसद मौतिक अधिकारों में संशोधन कर सकती है- केशवानंद भारती केस
 इंसानों के अनैतिक ब्यापार का निषेध संविधान का अनुच्छेद 23
- सही सुमेलन इस प्रकार है—

सूची-। सूची-॥

उपाधियों का निषेध 👤 अनुच्छेद 18

धार्मिक मामलों के प्रबंध 🗕 अनुच्छेद २६

की स्वतंत्रवा

अल्पसंख्यकों की भाषा - अनुच्छेद 29

का संरक्षण

शिक्षा का अधिकार 🕒 अनुच्छेद 21 A

- संसद को मौलिक अधिकारों में संशोधन का अधिकार दिया
 - कशवानंद भारती वाद ने
- गारत के सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान की मूल संरचना सिद्धांत (बुनियादी ढांचा सिद्धांत) का प्रतिपादन किया है
 - केशबानंद भारती बनाम केरल राज्य मुकदमे में
- ★ संपत्ति का अधिकार है कानूनी अधिकार
- सम्पत्ति के मूल अधिकार का लोप किया गया
 - साविधान (चौवातीसवां संशोधन) अधिनियम 1978 द्वारा
- वर्तमान समय में भारतीय संविधान के अंतर्गत संपत्ति का अधिकार है
 एक वैधानिक/विधिक/कानुनी अधिकार

- मारतीय संविधान प्रदान नहीं करता है
 - समान आवास का अधिकार
- * भारतीय संविधान में समानता का अधिकार जिन 5 अनुच्छेदों द्वारा स्वीकृत है, वे हैं अनुच्छेद 14-18
- मारतीय संविधान में नागरिकों को नहीं दिया गया है
 - सूचना का अधिकार
- सभी व्यक्तियों को प्राप्त है विधि के समान संरक्षण का अधिकार
- भारत में रहने वाला ब्रिटिश नागरिक दावा नहीं कर सकता
 - बापार और व्यवसाय की स्वतंत्रता के अधिकार का
- सर्वोच्च न्यायालय ने मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी है
 (1) आवास के अधिकार तथा (2) विदेश यात्रा के अधिकार को
- किसी को राष्ट्रगीत गाने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता क्योंकि
 इससे वाक स्वातंत्र्य और अभिव्यक्ति स्वावंत्र्य के अधिकार का
 - इसस वाक स्वातत्र्य आर आगव्याक स्वावत्र्य क आधकार व उल्लंघन होगा
 - इससे अंतः करण की और धर्म के अवाध रूप से आवरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन होगा
 राष्ट्रगीत गाने के लिए किसी को बाध्य करने वाला कोई विधिक
- बिदेशी नागरिकों को प्राप्त नहीं है

उपवंध नहीं है

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार
- मारत में केवल नागरिकों को उपलब्ध हैं
 - (i) भेदभाव के विरुद्ध अधिकार
 - (ii) देशभर में स्वतंत्र अमण की स्वतंत्रता
 - (iii) चुनाव लड़ने का अधिकार
- मारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त वह अधिकार, जो गैर-नागरिकों को भी उपलब्ध है
 — सर्विधानिक निराकरण का अधिकार
- मारतीय संविधान की प्रस्तावना में प्रयुक्त 'समाजवाद' शब्द को जिन अनुच्छेदों के साथ मिलाकर पढ़ने से सर्वोच्च न्यायालय को समान कार्य के लिए समान वेतन को मौलिक अधिकार परिमाषित करने की शक्ति प्राप्त हुई, वे हैं
 — अनुच्छेद 14 तथा 16
- लोक नियोजन के विषय में भारत के सभी नागरिकों को अवसर की समानता की प्रत्याभूति प्रदान करता है— अनुच्छेद 16(1) और 16(2)
- मारतीय संविधान मान्यता देता है
 - चार्मिक और भाषायी अल्पसंख्यकों को
- म छः वर्ष की आयु से 14 वर्ष की आयु के बीच के सभी बच्चों (शिशुओं)
 को शिक्षा का अधिकार
 मूल अधिकार है
- मारतीय संविधान में संशोधन करके शिक्षा का अधिकार जोड़ गया

1 अप्रैल, 2010 को

सम-समिव घटना एक

कथन (A): राज्य छह से चौदह वर्ष के सभी बच्चों को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगा।

कारण (R): एक प्रजातांत्रिक समाज में शिक्षा का अधिकार मानवाधिकार के रूप में विकास के अधिकार की व्याख्या के लिए अपरिहार्य है।

- (A) और (R) दोनों सही हैं और (A) का सही स्पष्टीकरण (R) है।
- वह अधिकार जो, राष्ट्रीय आपातकाल तक में भी समाप्त या सीमित नहीं किया जा सकता है— व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा जीवन का अधिकार
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 में प्रयुक्त 'हिंदू' शब्द सम्मितित नहीं करता
 भारतियां को
- मारत के किसी धार्मिक संप्रदाय/समुदाय को यदि राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक वर्ग का दर्जा दिया जाता है, तो वह निम्न विशेष लाभ/ लागों का हकदार हो जाता है
 - यह संप्रदाय/समुदाय विशेष शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना और संचातन कर सकता है।

यह संप्रदाय /समुदाय प्रधानमंत्री के 15 षाइंट कार्यक्रम के लाभ प्राप्त कर सकता है।

 किसी अपराध के अभिबुक्त को स्वयं अपने विरुद्ध गवाह बनने के लिए बाध्य नहीं किया जा सक्ता है, यह प्रावधान है

अनुच्छेद 20 (3) में

 दोषसिद्धि के संबंध में अभियुक्तों को दोहरे दंड एवं स्व-अभिशंसन से संरक्षण प्रदान करता है

अनुच्छेद 20

- विधि की सम्यक् प्रक्रिया के सिद्धांत को शामिल किया गया है
 - अनुच्छेद 21 में
- बंदी बनाए गए व्यक्ति के मौलिक अधिकारों की ख्ला प्रदत्त है
 अनु.22 से
- ☀ प्रत्यक्ष बंदीकरण अधिनियम के अंतर्गत एक व्यक्ति बिना मुकदमा
 चलाए बंदी बनाया जा सकता है
 3 माह के लिए
- वह प्रलेख जिसे किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता का महानतम रक्षक माना जाता है
 वंदी प्रत्यक्षीकरण
- बंधुआ मजदूर (उन्मूलन) अधिनियम संसद ने पारित किया था

- 1976节

* जोखिम भरे उद्योगों में बाल श्रम का उपयोग निषिद्ध किया गया है-(a) भारत के संविधान द्वारा

(b) 10 दिसंबर, 1996 के सर्वोच्च चायालय के निर्णय द्वारा

(c) संयुक्त राष्ट्र के चार्टर द्वारा

पूर्ति कीजिए :

'_____बिना कर्त्तव्य के उसी प्रकार है, जैसे मनुष्य बिना परछाई के।' - अधिकार

राज्य की नीति के निदेशक तत्व

- राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांतों को भारतीय संविधान में शामिल किए जाने का उद्देश्य है-
 - सामाजिक और आर्थिक प्रजातंत्र को स्थापित करना
- ₩ राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों का उद्देश्य है-

—एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना, सामाजिक-आर्थिक न्याय को सुनिश्चित करना, एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना करना।

- राज्य की नीति के निदेशक तत्वों के बारे में सही कथन हैं—
 1. ये तत्व देश के सामाजिक-अर्थिक लोकतंत्र की व्याख्या करते हैं।
 2. इन तत्वों में अंतर्विष्ट उपबंध किसी न्वायालय द्वारा प्रवर्तनीय (एनफोर्सिएबल) नहीं हैं।
- कल्याणकारी राज्य की संकल्पना का समावेश भारत के संविधान में है राज्य के नीति-निदेशक तस्तों में
- मारतीय संविधान में सिम्मिलित नीति-निदेशक तत्वों की प्रेरणा हमें
 प्राप्त हुई
 आयरलैंड संविधान से
- ¥ नीति-निदेशक सिद्धांत बाद योग्य नहीं है
- मारत के संविधान के अनुसार, देश के शासन के लिए आधारभूत है
 राज्य की नीति के निदेशक तस्व
- समान कार्य के लिए समान वेतन भारत के संविधान में सुनिश्चित
 किया गया एक राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांतों का अंग है
- मारत में पंचावती राज प्रणाली की व्यवस्था की गई है
 - राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांत के अंतर्गत
- * राज्य सरकार को ग्राम पंचायतों को संगठित करने के लिए निर्देशित करता है - अनुच्छेद 40
- मारत के संविधान के अंतर्गत ग्राम पंचायतों का गठन-

निदेशक सिद्धांत है।

सही सुमेलन इस प्रकार है—

अनुच्छेद 40 : ग्राम पंचायतों का गठन

अनुच्छेद 41 : कुछ दशाओं में काम, शिक्षा और लोक सहायता

पाने का अधिकार

अनुच्छेद 44 : नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता

अनुच्छेद 48 : कृषि एवं पशुपालन का गठन

कथन (A): मनरेगा दर अई परिवार के कम से कम एक सदस्य को वर्ष में 100 दिन का रोजगार दिलाने का प्रावधान करता है। कारण (R): रोजगार का अधिकार संविधान के भाग III में प्राविधित है।

(A) सही है, परंतु (R) गलत है।

सम-समिव घटना पक्र

भारतीय संविधान में मूल कर्त्तव्य शामिल किया गया

- खर्ण सिंह समिति की संस्तृति पर

- * संविधान में मौलिक कर्ताब्यों को सम्मिलित किया गया 1976 में
- मारत के संविधान का वह भाग जिसमें मौलिक कर्त्तव्य उल्लिखित हैं
 माग IVA (4 क) में
- मारतीय नागरिकों के लिए 10 मूल कर्त्तव्य संविधान में जोड़े गए
 42वें संविधान संशोधन द्वारा
- मारतीय संविधान में भारतीय नागरिकों के मूल कर्त्तव्य शामिल हैं
 अनुच्छेद 51-क में
 - मौलिक कर्त्तव्यों से संबंधित सही कथन है

 —उन्हें संवैधानिक प्रक्रिया से ही बढ़ाया जा सकता है। अस्पष्ट
 विधियों की व्याख्या के लिए उनका उपयोग किया जा सकता है।
 किसी विशिष्ट कर्त्तव्य का पालन करना संवैधानिक कानून के क्षेत्र
 में आता है, जिसे न्यायालय निश्वित करता है
- मारत में मौलिक कर्त्तव्य है
 —हमारी मिली-जुती संस्कृति की समृद्ध विरासत को संरक्षित करना
 एक नागरिक के मूल कर्त्तव्यों में सम्मिलित है
 - —प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और उसका संवर्धन। स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को संजोए रखें और उनका पालन करें। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें
 - गारतीय संविधान के अंतर्गत मौलिक कर्त्तव्यों में सम्मिलित है — देश की रक्षा करना एवं राष्ट्र की सेवा करना। हमारी
 - दश का रक्षा करना एवं राष्ट्र का सवा करना हमारा सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझना और उसका परिरक्षण करना। सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखना एवं हिंसा से दूर रहना।
- नारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त नागरिकों के मूल कर्त्तव्यों में सम्मिलित हैं

 मिश्रित संस्कृति की समृद्ध विरासत की रक्षा। वैज्ञानिक
 मनोदशा और खोज की भावना का विकास। वैयक्तिक और
 सामूहिक कार्यकलायों के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टवा के लिए प्रयत्न।
- ¥ भारतीय नागरिक का मूल कर्तव्य है वन्य प्राणी का संरक्षण
- "भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य होगा, प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण एवं सुघार''। शामिल है — अनुच्छेद 51-क में सही कथन हैं — मल कर्तव्य मौतिक अधिकारों का भाग नहीं है।
- सही कथन हैं मूल कर्त्तव्य मौतिक अधिकारों का भाग नहीं है। भारतीय संविधान के भाग-IV क में मौतिक कर्त्तव्य गिनाए गए हैं। अनुच्छेद 51- A प्रत्येक भारतीय नागरिक के मौतिक कर्त्तव्यों की व्याख्या करता है।
- ¥ भारतीय संविधान के भाग IVA(मूल कर्तव्य) में वर्णित है
 - राष्ट्रीय ध्वज का आदर करना। भारत के सभी लोगों के मध्य भाई-चारे का भाव विकसित करना। हमारी समग्र संस्कृति की मृत्यवान धरोहर की रक्षा करना।

☀ राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांतों का सही सुमेलन इस प्रकार है—

अनुच्छेद 51 : अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के संवर्धन

से संबंधित है।

अनुच्छेद 41 : काम, शिक्षा, लोक सहायता पाने का अधिकार अनुच्छेद 43 (क) : उद्योगों के प्रबंध में कर्मकारों के भाग लेने का

अनुच्छेद ४८ (क) : पर्यावरण संरक्षण

मारत के संविधान में अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की अभिवृद्धि का
 उल्लेख है — राज्य की नीति के निदेशक तत्वों में

* गारत की विदेश नीति से संबंधित है — अनुच्छेद 51

संविधान जिनके शोषण के बिरुद्ध अधिकार स्वीकृत करता है,

बच्चे, स्त्रियां तथा जनजातियां

* राज्य के नीति-निदेशक तत्व हैं-

(a) मद्यनिषेध, (b) गौ-संरक्षण, (c) पर्यावरण-संरक्षण

राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांत मौलिक अधिकारों से भिन्न है

जबकि मौतिक अधिकार प्रवर्तनीय हैं

व्योंकि निदेशक सिद्धांत प्रवर्तनीय नहीं है,

 गांधीवादी सिद्धांत जो राज्य की नीति के निदेशक तत्वों में प्रतिबिंबित होते हैं

> ग्राम पंचायतों को संघटित करना, ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करना

- राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांतों में से वह जिसके बारे में संविधान शांत है
 प्रीढ़ शिक्षा
- राज्य का नीति-निदेशक सिद्धांत जो संविधान में बाद में जोड़ा गया
 —मुफ्त कानुनी सलाह
- राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांतों में सम्मिलित नहीं है
 - —सूचना का अधिकार
- नीति-निदेशक तत्व है
 समान नागरिक संहिता
- राज्य के नीति-निदेशक तत्त्वों में है—
 - राज्य सुनिश्चित करने का प्रयास करेगा कि पुरुष और महिलाओं की समान कार्य हेतु समान वेवन, जीविकोपार्जन हेतु पर्याप्त साधनों का समान अधिकार,
 - काम हेतु न्यायसंगत और मानवोचित दशाओं में रहें
- 'राज्य के नीति-निदेशक सिद्धान्त एक ऐसा चेक है जो बैंक की सुविधानुसार अदा किया जाता है।'कहा था — के.टी. शाह ने

मूल कर्त्तव्य

 मारत की प्रमुता, एकता और अखंडता की रक्षा करने और उसे अक्षुण्ण रखने के मूल कर्त्तव्य को रखा गया है

तीसरे स्थान पर

 मारतीय संविधान के 42वें संविधान संशोधन विधेयक द्वारा 'मूल कर्त्तव्यों' को सिम्मिलित किया गवा है
 अनुकोद 51A में

सन-समिव घटना वक्र

सही सुमेलित है—

संविधान का भाग विषय

(a) बार II नागरिकता

(b) शग III मूल अधिकार

(c) भाग IV राज्य की नीति के निदेशक तत्व

 "गारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण रखें।" यह उपबंध किया गया है — मूल कर्तव्य में

राष्ट्रपति

कथन (A): संघीय कार्यपालिका का मुख्यिया मारत का राष्ट्रपति होता
 है।

कारण (R): राष्ट्रपति की शक्तियों की कोई सीमा नहीं है।

(A) सही है किंतु (R) गलत है।

- मारत में राष्ट्रपति का निर्वाचन होता है अप्रत्यक्ष मतदान से
- कथन (A): भारत का राष्ट्रपित अप्रत्यक्ष निर्वाचन से चुना जाता है। कारण (R): एक निर्वाचन मंडल की व्यवस्था है, जो संसद के दोनों सदनों और राज्यों की विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्यों को मिलाकर बनता है।
- (A) और (R) दोनों सही हैं और (A) का सही स्पष्टीकरण (R) है।
- मारत में राष्ट्रपति का चुनाव किया जाता है

एकल हस्तांतरणीय मत प्रणाली द्वारा

राष्ट्रपति के निर्वाचन मंडल के सदस्य होते हैं

संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य,
 सभी राज्यों की विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य,
 दिल्ली और पुडुबेरी विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य

- राष्ट्रपति के चुनाव प्रकरण के लिए सही नहीं है
- निर्वाचक मंडल के अपूर्ण होने के आधार पर राष्ट्रपति का चुनाब स्थिगत किया जा सकता है।
- गारक के राष्ट्रपति के उम्मीदवार के प्रस्ताव का अनुसमर्थन किया जाना
 चाहिए कम से कम
 पवास निर्वाचकों द्वारा
- राष्ट्रपति के निर्वाचन में राज्य का मुख्यमंत्री मतदान करने के लिए पात्र नहीं होता यदि
 - वह राज्य विधान मंडल में उच्च सदन का सदस्य हो
- मारत के राष्ट्रपित के चुनाव में राज्य की विधान सभा के प्रत्येक निर्वादित सदस्य के वोटों की संख्या, उस राज्य की जनसंख्या को विधान सभा की कुल निर्वादित सदस्य संख्या द्वारा दिगाजित कर प्राप्त गागफल की एक हजार के गुणकों के बराबर होती है। वर्तमान स्थिति में ''जनसंख्या" से तात्पर्य यथा अभिनिष्टिवत जनसंख्या से है

- 1971 की जनगणना द्वारा

राष्ट्रपति के उम्मीदवार के लिए आवश्यक है

आयु 35 वर्ष हो, सांसद चुने जाने की योग्यता रखता हो,
 देश का नागरिक हो

- एक सांसद अथवा विधान सभा का सदस्य राष्ट्रपति निर्वाचित हो सकता है, परंतु
- निर्वाचित होने के तुरंत उपरांत अपनी सदस्यता छोड़नी होगी।
- सष्ट्रपति के पद के लिए पुनः निर्वाचन की योग्यताएं निर्धारित करता है
 अनुच्छेद 57
- अगर गारत के राष्ट्रपति के चुनाव में कोई विवाद है, तो उस विवाद को सौंपा जा सकता है — भारत के सर्वोच्च न्यायालय को
- ★ राष्ट्रपति पांच वर्ष तक अपने पद पर रहता है-

- अपने पद ग्रहण के दिन से

मारत का राष्ट्रपति अपना त्यागपत्र सौंपता है

मारत के उपराष्ट्रपति को

मारत के राष्ट्रपति को उसके पद से हटाया जा सकता है

– संसद द्वारा

- ★ राष्ट्रपति पर महाभियोग चलाया जा सकता है— अनुकोद 61 के द्वारा
- ☀ राष्ट्रपति पर महाभियोग का आरोप लगाया जा सकता है

संसद के किसी भी सदन द्वारा

- मारत के राष्ट्रपति पर महाभियोग चलाने के लिए आवश्यक है
 कम से कम 14 दिनों की पूर्व सुवना
- मारत के राष्ट्रपति के निर्वाचकगण का तो माग है, परंतु उसके महाभियोग अधिकरण का भाग नहीं है

– राज्यों की विधान सभाएं

भारत के राष्ट्रपति के महाभियोग की प्रक्रिया है

अर्ध-न्यायिक प्रक्रिया

- पदासीन राष्ट्रपित की पदावधि की समाप्ति से मिन्न किसी कारण से उत्पन्न होने वाली रिक्ति की दशा में रिक्ति गरने के लिए निर्वाचन अवश्य हो जाना चाहिए
 - रिक्ति होने की तिथि से छह माह के भीतर
- जब राष्ट्रपित मृत्यु, त्यागपत्र, पदच्युत या अन्य कारणों से अपने कर्त्तव्यों को नहीं निभा सकता है, तो उपराष्ट्रपित राष्ट्रपित के रूप में कार्य करता है
 6 माह तक
- यदि भारत के राष्ट्रपति का पद रिक्त हो जाए और कोई उपराष्ट्रपति
 मी न हो, तब कार्यवाहक राष्ट्रपति होगा

सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश

🖈 गरत का कार्यपालिका अध्यक्ष (Executive Head) है

– राष्ट्रपति

संघ की कार्यपालिका शक्तियां राष्ट्रपति में निहित हैं

- अनुच्छेद 53 के अंतर्गत